# Hitch an Usiya The Gazette of India

### ग्रसाधारण

# EXTRAORDINARY.

भाग II—स्ववद्य 3--उपस्ववद्य (ii)

PART II-Section 3-Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

eto 79]

नर्षे विल्ली, बृहस्पतिवार, फरवरी 14, 1974/माघ 25, 1895

No 79]

NEW DELHI, THURSDAY, FEBRUARY 14, 1974/MAGHA 25, 1895

इस माग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती हैं जिससे कि पह अलग संकलन छे रूप में रखा या सर्व । Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

### MINISTRY OF COMMERCE

### NOTIFICATION

New Delhi, the 14th February 1974

- S.O. 110(E).—In exercise of the powers conferred by clause (e) of sub-section (2) of section 5 of the Khadi and other Handloom Industries Development (Additional Excise Duty on Cloth) Act, 1953 (12 of 1953), the Central Government hereby makes the following rules, namely:—
- 1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Khadi and other Handloom Industries Development (Exemption from Payment of Additional Excise Duty on Certain Varieties of Rayon and Art-Silk and Woollen Fabrics) Rules, 1974.
- (2) They shall be deemed to have come into force two years before the date of their Publication in the Official Gazette.
- 2. Exemption from Payment of Duty.—Rayon and art-silk fabrics and woollen fabrics produced on handlooms and processed with the aid of power shall be exempt from the whole of the duty of excise leviable thereon under the Khadi and other Handloom Industries Development (Additional Duty on Cloth) Act, 1953 (12 of 1953).

[No. F.15012/4/72-TEX.IV]

MANI NARAYANSWAMI, Jt. Secy.

## वाजिल्य मंत्रालय

# ग्रविसूचना

# नई दिल्ली, 14 फरवरी, 1974

- का॰ वा॰ 110(वा).—खादी तथा प्रन्य हथकरघा उद्योग विकास (वस्त्र पर ग्रतिरिक्त उत्पाद-मुल्क) ग्रीधिनियम, 1953 (1953 का 12) की धारा 5 की उपधारा (2) के खण्ड (ङ) द्वारा प्रवस्त मक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, ग्रर्थात् :---
- 1. संशिष्त नाभ भीर प्रारम्भ ——(1) इन नियमों का नाम खादी तथा अन्य ह्यकरथा विकास (रेयन सथा कृत्किम रेणम भीर अन के तन्तु कृतों की कतिएय किस्मों पर धतिरिक्त उत्पाद- शुक्क के संदाय से छूट) नियम, 1974 है।
  - (2) ये नियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष पूर्व प्रवस हुए समझे जाएगे।
- 2. शुक्क के संदाय से छूट: हथकरघा द्वारा उत्पादित और शक्ति की सहायता से प्रसंस्कृत रेयन तथा कृतिम रेशम और ऊन के तन्तु कृतों को खादी तथा अन्य हथकरघा उद्योग विकास (वस्त्र पर प्रतिरिक्त उत्पादक-गुरूक) अधिनियम, 1953 (1953 का 12) के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय समस्त उत्पादक-शुरूक से छूट दी जाएगी।

[सं॰ फा॰ 15012/4/72-वस्त्र-IV] मणि नारायणस्वामी, संयुक्त सिषव ।